Subject- Psychology
Class- UG, Sem-I
Unit- 04, Individual Differences.
Topic- Two Factor Theory of Spearman.
Date-
Name- Dr. Shyam Sundar Sharma.

Ques. बुद्धि के द्विकारक सिद्धांत का वर्णन करें।

Ans. बुद्धि के द्विकारक सिद्धांत का प्रतिपादक चार्ल्स स्पीयरमैन ने किया था। इन्होंने प्रयोगात्मक अध्ययनों को कारक विश्लेषण प्रविधि से माप कर उनके आंकड़ों का विश्लेषण किया और फलस्वरूप 1927 ई० में बुद्धि की संरचना के दो कारक प्राप्त किए। स्पीयरमैन ने अपने सिद्धांत में देखा कि जो बच्चे एक विषय में अच्छा प्रदर्शन करते हैं, वे अन्य विषयों में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।

उन्होंने बुद्धि के दो कारक बताए- सामान्य कारक (General Factor) या G-factor तथा विशिष्ट कारक (Specific factor) या S-factor.

(1) सामान्य कारक :-

स्पीयरमैन का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति में मानसिक कार्य करने की सामान्य क्षमता जिन्न मात्रा में पाई जाती है जिन्हें सामान्य कारक कहते हैं। इसे "G" कारक को मानसिक ऊर्जा की संज्ञा दी है।

G- कारक की विशेषताएँ :-

(1) यह कारक मनुष्य में जन्मजात होता है।

P.T.O

(ii) यह कारक सभी में सामान्य रहता है।
(iii) सामान्य कारक में प्रत्येक व्यक्ति भिन्न होता है।

विशिष्ट कारक :-

विशिष्ट कारक का सम्बंध में व्यक्ति के विशिष्ट कार्यों से होता है। स्पीयरमैन का यह भी मानना था की कुछ मानसिक कार्य एक दूसरे से भिन्न होता है एवं उन्हें करने के लिए व्यक्ति में विशिष्टता होना भी आवश्यक है।

S- कारक की विशेषताएँ :-

(i) यह कारक भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में कम या अधिक मात्रा में पाया जाता है।
(ii) जिस व्यक्ति में विशिष्ट कारक की अधिकता होती है, वे उस कार्य में निपुण होता है।
(iii) यह कारक व्यक्तिगत भिन्नता भी प्रकट होता है।
(iv) विशिष्ट कारक सीखा या अर्जित होता है।